International Journal of Education and Science Research Review P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org August- 2017, Volume-4, Issue-4 Email- editor@ijesrr.org

स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम एवं महिलाएँ

Savita
Government Girls Higher Secondry School
Fatehabad, Haryana

सार–

प्रकृति और पारस्परिक सम्बन्धों के परिणाम को ही सृष्टि का प्रारम्भ माना जाता है, जिसमें नारी को 'प्रकृति' तथा नर को 'पुरुष' के रूप में सम्मिलित किया गया है सृष्टि के प्रारम्भ से ही नारी को अर्द्धशक्ति के रूप में पूज्यनीय माना गया है एवं उसे भार्या या गृहलक्ष्मी के रूप में सम्मान प्रदान किया गया है। मानव जगत् का प्रायः आधा भाग नारी जाति का है जिसका भारतीय संस्कृति के निर्माण एवं संवर्धन में आदि काल से ही गरिमामय एवं महत्वपूर्ण अपरिहार्य योगदान रहा है। प्राचीन एवं नवीन समाजों एवं संस्कृतियों के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन करने से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि स्त्रियों में ही वह क्षमता है जिसने न केवल मनुष्यों को जन्म दिया अपितु मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास को जन्म देकर आगे बढ़ाया। स्त्रियों ने ही सर्वप्रथम सभ्यता एवं संस्कृति की नींव डाली थी यही कारण है कि प्रारम्भिक समय की अनेक सभ्यतायें जैसे कि सिन्धु घाटी की सभ्यता में समाज का स्वरूप मातृसत्तात्मक था, इस सभ्यता की खुदाई के पश्चात हमें यह ज्ञात होता है कि इस काल में मातृदेवी की अराधना की जाती थी तथा समस्त घरों में मातृदेवी की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं जिससे यह स्पष्ट है कि प्राचीन सभ्यताओं के काल में भी स्त्रियों को सर्वशक्ति एवं सर्वगुण सम्पन्न मानकर उसे सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया था। प्रारम्भ से ही कन्या, पत्नी तथा माँ के रूप में स्त्रियों का स्थान महत्वपूर्ण था। नारी को सदैव से ही सर्वशक्ति सम्पन्न माना गया है तथा विद्या, शील, ममता, यश और सम्पत्ति का प्रतीक समझा गया है यही नहीं वरन् समाज में नारी को इतना अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया कि उसके बिना अकेला पुरूष अपूर्ण और अधूरा समझा गया। वास्तव में स्त्री माता के रूप में भी त्याग, तप और प्रेम की त्रिवेणी है, जिसे इस त्रिवेणी के प्रेम जल में स्नान करने का सौभाग्य न मिला हो, उससे अधिक अभागा और दूसरा न होगा। आज भी दक्षिण की द्रविड़ भाषा में नारी के लिए सर्वमान्य सम्बोधन का शब्द अम्माइलु या अम्मा है। इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं है कि समाज का संगठन नारी से ही पूर्ण होता है तथा उसके बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। बह्म पुराण में तो एक स्थान पर यहाँ तक कहा गया है कि–

''एकेन सत्कृतं नाथ तस्मादर्घफलं लभेत।
जायआ तु कृतं नाथ पुष्फलं पुरूषो लभेत।।

अर्थात् नारी के साथ कोई भी कार्य करने से उसका फल अधिक मिलता है।

प्रस्तावना–

सन् 1857 में जो महान संघर्ष भारत में अंग्रेजी शासन के शोषण एवं अत्याचारों के विरूद्ध प्रारम्भ हुआ था वह वास्तव में सम्पूर्ण भारत का एक सम्मिलित संग्राम था, जिसमें जाति–पाति का कोई भेदभाव नहीं था। यही कारण था कि इसमें समाज के प्रत्येक वर्ग, जिसमें राजा, जमींदार, विद्वान, पंडित, मौलवी और किसान इत्यादि सभी ने सक्रिय सहयोग दिया था। 1857 के विद्रोह को लेकर यद्यपि विभिन्न प्रकार की धारणाये प्रचलित हैं सभी इतिहासकारों ने इसे अलग–अलग नामों से सम्बोधित किया है कुछ ने ईसाईयों के विरूद्ध धार्मिक विद्रोह, साम्प्रदायिक विस्फोट, सैनिक विद्रोह तो कुछ ने बर्बरता और सभ्यता के बीच युद्ध, राष्ट्रीय विद्रोह इत्यादि नामों से पुकारा परन्तु वास्तविकता तो यही है कि यह प्रथम स्वाधीनता संग्राम ही था जो हिन्दुओं एवं मुसलमानों का संगठित संघर्ष था। डा. सेन ने तो यहां तक कहा है कि ''जिस विद्रोह का धार्मिक संघर्ष के रूप में आरम्भ हुआ उसका अन्त स्वतन्त्रता संग्राम के रूप में हुआ तथा विद्रोहियों ने एक विदेशी सरकार को निकालकर पुनः पुरानी व्यवस्था को स्थापित करने का प्रयत्न किया। डाक्टर जूडिथ एम. ब्राउन ने तो यह कहा है कि एक सैनिक विद्रोह संसृष्टि ही भारतीय अंग्रेजी चित्र का भाग बन चुकी थी। भले ही यह विद्रोह अनेक नामों से विख्यात था परन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इसका कारण समस्त भारतवासियों के लिए एक ही था और वह था अंग्रेजी शासन के प्रति अत्याधिक असन्तो"।।

अंग्रेजी सरकार द्वारा अपनायी गयी नीतियां अत्यन्त स्वार्थपूर्ण, एवं अपमानजनक थी, जिसने विभिन्न राज्यों एवं रियासतों के स्वतन्त्र अस्तित्व को समाप्त करने की चेष्टा की थी। जिससे इन रियासतों में अंग्रेजी शासन के विरूद्ध अत्यन्त आक्रो"। फूट गया जिसकी परिणति 1857 में विद्रोह के रूप में हुई। उन्होंने विभिन्न तरह के तरीके अपनाकर भारतीयों

का शोषण किया जैसे बेईमानी एवं वादा खिलाफी करके रियासते हड़पना, पेंशन बन्द करना, जमींदारों पर अत्याधिक कर, अत्याधिक चुंगी वसूलना, धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना, संधि पत्रों तथा अन्य अपवादों का विरोध करना, विभिन्न नीतियों से रियासतें हड़पना जैसे–अवैध इत्यादि, स्त्रियों का अपमान करना, दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी स्वीकार न करना इत्यादि और जब यह अत्याचार समस्त सीमाओं को पार कर गया तब भारतीयों ने इससे संघर्ष करने का निर्णय कर लिया। ऐसा नहीं है कि 1857 का विद्रोह एकदम प्रारम्भ हो गया था वरन् इसकी पृष्ठभूमि काफी लम्बे समय से तैयार हो रही थी तथा समय–समय पर अनेक छोटे–छोटे विद्रोह हुए– जैसे कि 1768 में चुआर तथा हो का विद्रोह, 1831 में कोलो का विद्रोह, सन्थाल विद्रोह, अहोम विद्रोह, खासी विद्रोह, पागलपंथी विद्रोह, फैरोजियो का विद्रोह, भील विद्रोह, कच्छ विद्रोह, रार्मोसी विद्रोह, विजयनगरम के राजा का विद्रोह, दीवान वेलाथ्म्पी का विद्रोह, मीरकासिम का विद्रोह इत्यादि परन्तु ये किसी जाति या विशेष उद्देश्य तक सीमित थे। 1857 का विद्रोह इन्हीं के प्रयासों का प्रतिफल था, जिसमें सभी वर्गों ने सामूहिक रूप से सहयोग दिया था। जिसमें नारी जो कि अर्द्धशक्ति कही जाती है ने भी सक्रिय सहयोग दिया था, क्योंकि समाज भी धीरे–धीरे इस बात से अवगत होने लगा था कि पुरुष और स्त्री मिलकर ही समाज को आगे बढ़ा सकते हैं तथा विभिन्न समस्याओं का सामना दोनो मिलकर अच्छी तरह से कर सकते है। अन्ततः यही हुआ कि 1857 का संग्राम केवल पुरुषों के सहयोग से नहीं वरन् स्त्री की सहभागिता से आगे बढता गया जिसमें नारियों ने अंग्रेजों का न केवल सफलता पूर्वक सामना किया वरन् वे अपनी जान न्यौछांवर करने में भी अग्रणी रही। यद्यपि हमें 1857 के संग्राम में सहयोग देने वाली स्त्रियों के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी नहीं है क्योंकि हम अभी तक 1857 के संग्राम का सम्पूर्ण वृतान्त जान सकने में असमर्थ हैं फिर भी उपलब्ध सामग्री के आधार पर कुछ विशेष स्थानों एवं घटनाओं का वर्णन किया जा सकता है जिसमें नारियों ने अत्यन्त साहस का परिचय देकर न केवल अपने आत्म सम्मान की रक्षा की वरन् देष की रक्षा म भी अमूल्य योगदान दिया।

महारानी लक्ष्मीबाईः–

महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म 16 नवम्बर 1835 को मोरोपन्त नामक परिवार में हुआ था। इनके बचपन का नाम मनुबाई था। ये प्रारम्भ से ही अपने पिता के साथ उनके कार्यों में संलग्न रहा करती थी। यहां तक कि जहाँ पर भी वो जाते थे, ये उनके साथ ही जाया करती थी। जब मनुबाई तीन–चार वर्ष की थी, तब इनकी माता भागीरथी बाई का देहान्त हो गया। जिसके फलस्वरूप अब इनके पालन, पोषण का समस्त उत्तरदायित्व इनके पिता मोरोपंत को वहन करना पड़ा। लक्ष्मीबाई के दो प्रिय मित्र थे, प्रथम तो बाजीराव के दत्तक पुत्र नाना साहब और द्वितीय राव साहब। मनुबाई ने प्रारम्भिक शिक्षा, खेल इत्यादि सभी कार्य नाना साहब एवं राव साहब की मित्रता के साथ ही सम्पन्न किये थे। इसी के साथ–साथ महारानी लक्ष्मीबाई ने युद्ध कला में भी निपुणता हासिल की। महारानी लक्ष्मीबाई की बाल्यावस्था की शिक्षा ने ही उनकी भावी तेजस्विता और आलौकिक साहस की नीवं रखी। किशोरावस्था में महारानी लक्ष्मीबाई का विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ सम्पन्न हुआ। परन्तु दुर्भाग्यवश महारानी लक्ष्मीबाई के कोई सन्तान नहीं हुई तथा उन्होंने दामोदर राव को अपना दत्तक पुत्र बना लिया और यही कारण था, जिससे झाँसी भी 1857 की क्रान्ति का मुख्य केन्द्र बना।

वास्तव में ब्रिटिश सरकार ने झाँसी की सम्पन्नता से प्रभावित होकर ही झाँसी का विलय करने का निश्चय कर लिया था और अब वो केवल एक बहाना ढूंढ रहे थे कि उन्हें यह बहाना मिल गया। शीघ्र ही महारानी लक्ष्मीबाई के पति श्री गंगाधर राव का निधन हो गया। अब महारानी लक्ष्मीबाई ने अपने दत्तक पुत्र दामोदार राव को अपना उत्तराधिकारी बनाने की इच्छा व्यक्त की परन्तु अंग्रेजों ने उनके दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता ही प्रदान नहों की वरन् झाँसी राज्य को कम्पनी राज्य में मिलाने की घो"णा भी कर दी। महारानी लक्ष्मीबाई जो उस समय अपने नाबालिक पुत्र की ओर से शासन कर रही थी वे अत्यन्त वीरांगना एवं युद्ध कुशल थी, और जब उन्हें कम्पनी द्वारा झाँसी राज्य के विलय की सूचना मिली तो उन्होंने इसे अपना अपमान समझा तथा झाँसी देने से इन्कार कर दिया और घो"णा की कि मैं झाँसी की सुरक्षा हेतु युद्ध करूंगी, मेरी झाँसी नहीं दूंगी।

महारानी लक्ष्मीबाई ने यह दृढ़ संकल्प कर लिया था, कि वे झाँसी ब्रिटिश सरकार को नहीं सौपेंगी। उन्होंने अत्यन्त वीरता, साहस एवं युद्ध कुशलता के साथ अंग्रेजों से संघर्ष किया। यही नहीं वरन् इनकी प्रिय दासियां मंदुरबाई और काशीबाई के साथ–साथ अनेक स्त्रियां पर्दो का परित्याग कर युद्ध में अत्यन्त वीरता से लड़ी, जिनके पराक्रम और वीरता को देखकर अंग्रेज भी आश्चर्य चकित थे। महारानी लक्ष्मीबाई को वीरता से प्रभावित होकर सर हयूरोज जो कि ब्रिटिश

सरकार की ओर से मुकाबला कर रहे थे उन्होंने कहा कि ''शत्रु दल की ओर का सबसे उत्तम मनुष्य यदि कोई है तो वह झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई है। अर्थात् सर ह्यू रोज ने उन्हें बागियों में अकेला पुरुष कहकर सम्मानित किया। इस युद्ध में कानपुर से आये तात्या टोपे ने महारानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया था। इस युद्ध में महारानी लक्ष्मीबाई ने न केवल वीरता का परिचय दिया वरन् बुद्धिमत्ता पूर्वक युद्ध संचालन भी किया। जब समय–समय पर इनकी सेना ब्रिटिश सरकार की शक्तिशाली सेना देखकर अपना उत्साह खो बैठती थी, तब महारानी लक्ष्मीबाई अपने भाषणों के द्वारा उनमें नये उत्साह का संचार करती थीं। वे कहती थी कि धिक्कार है। तुम्हारे मनुष्य जीवन को, मैं तो स्त्री जाति हूँ तो भी अपने साहस और धैर्य के बल पर कर्तव्य कर्म का परित्याग नहीं चाहती और तुम पुरुष होकर ऐसे कायरता वाक्य मुख से निकालते हो। इस अपार संसार में सभी को एक दिन मरना है। यदि हम अपने राज्य के काम आवें और उस कर्तव्य यज्ञ में हमारा मानवी जीवन भी समाप्त हो जाए तो क्या हम इस लोक और परलोक में यशस्वी न होंगे। जिससे सैनिक पुनः नये उत्साह से यद्ध करना प्रारम्भ कर देते, परन्तु शीघ्र ही अंग्रेजों ने झाँसी पर कब्जा कर लिया। रानी तात्या टोपे के साथ काल्पी की ओर (मध्य भारत) निकल पड़ी परन्तु वहां भी अंग्रेजी सेना ने उनका पीछा किया, अन्ततः वे ग्वालियर पहुंची। जहाँ पर अंग्रेजी सेना से उनका भयंकर संघर्ष हआ और अन्त में 18 जून 1858 को ग्वालियर के पास समरांगण के बीच में महान वीरांगना स्त्रीरत्न महारानी लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुई।

यद्यपि महारानी लक्ष्मीबाई इस संघर्ष में असफल रही परन्तु अपनी अद्भुत वीरता का परिचय देकर उन्होंने भारतीय नारी के लिए एक नयी मिसाल कायम की और यह सिद्ध कर दिया कि नारी किसी भी दृष्टि में पुरुषां से कम नहीं है वरन् यदि वह चाहे तो वह पर्वत को भी हिला सकती है। इस बात की पुष्टि इस कथन से होती है कि अंग्रेजी लेखक मेलसन साहब ने भी राव साहब पेषवा, बांदा के नवाब, तात्या टोपे और लक्ष्मीबाई इन चारों मुखियों की बुद्धिचतुरता की तुलना करके उन सबमें महारानी लक्ष्मीबाई को ही बुद्धिमती एवं श्रेष्ठ बतलाया और जब अंग्रेज भी किसी स्त्री को उसकी कुशलता के कारण पुरुषां से अग्रणी रखे तो इससे बड़ी बात क्या हो सकती है जिसकी साक्षात् प्रतिमूर्ति थी झाँसी की रानी महारानी लक्ष्मीबाई।

बेगम हजरत महलः–

बेगम हजरत महल ने अवध में 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की कमान संभाली थी। झाँसी की भांति ब्रिटिश सरकार अवध राज्य को भी कम्पनी राज्य बनाना चाहती थी और झाँसी की भांति उसने बड़ी कपटपूर्ण एवं अपमानजनक रणनीति अपनायी। उस समय अवध एक अत्यन्त सुन्दर प्रान्त था तथा वहां का नवाब वाजिद अली शाह था। ब्रिटिश सरकार ने वाजिद अली शाह पर कुप्रषासन का आरोप लगाकर अवध का विलय करने का प्रयत्न किया और जब वाजिद अली शाह ने इसका विरोध किया तब उन्हें गिरफ्तार करके कलकत्ता जेल में भेज दिया गया। जिससे अवध में अत्याधिक आक्रो"ा फैल गया, परन्तु जब ब्रिटिश अफसरों ने लोभ के कारण लखनऊ अवध में लूट खसोट प्रारम्भ कर दी, तो वातावरण अत्याधिक अषान्त हो गया तथा पीड़ित जनता ने थ्श्ज्ञकयत करनी प्रारम्भ कर दी कि उन पर अत्याधिक अत्याचार हो रहा है। इसी समय वाजिद अली शाह की बेगम, हजरतमहल जो कि एक दबंग महिला थी, वे अपनी प्रजा के रक्षक के रूप में सामने आयी। उन्होंने जब यह देखा कि नवाबो की निजी सम्पत्ति नीलाम पर चढ़ाई गयी और बहुत से नीच कृत्य किये गये जो अवध के लिए शर्मनाक और अपमानजनक थे। तो उन्होने एक प्रहरी के रूप में अवध की रक्षा की एवं अवध ब्रिटिश सरकार को सौंपने से इन्कार कर दिया।

बेगम ने विद्रोही सैनिकों एवं नेताओं की सहायता से लखनऊ पर अधिकार कर लिया तथा अपने पुत्र विरजिसकद्र को सिंहासन पर बैठाकर स्वयं उनकी संरक्षिका बनकर शासन प्रबन्ध अपन हाथों में ले लिया तथा अंग्रेजी सेना के विरूद्ध संघर्ष में अत्यन्त वीरता का परिचय दिया। यही नहीं वरन् सामान्य स्त्रियों ने भी इस संघर्ष में बढ़–चढ़कर भाग लिया, जो मरदाना वेश धारण कर हथियार बांधकर पुरुषां से अलग युद्ध में संलग्न थी। इसी के साथ–साथ जो स्त्रियां युद्ध में भाग नही ले पाती थी वो विभिन्न तरह से अपनी घृणा व्यक्त करके सैनिकों को प्रोत्साहित करती थी, यहां तक की कोई–कोई स्त्री अपनी नफरत के पागलपन में छिपने से घृणा कर रही थी और दांत पीसकर हिन्दू गालियां दे रही थी।

यद्यपि बेगम हजरत महल ने रानी लक्ष्मीबाई की भांति सैनिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, परन्तु उन्होंने न केवल बड़ी कुशलता से सैन्य संचालन किया वरन् स्त्रियों के सैनिक संगठन का भी निर्माण किया। उन्होंने स्त्रियों को युद्ध में बन्दूकें चलाने इत्यादि की भी प्रेरणा दी थी। साथ ही साथ जो स्त्रियाँ बन्दूकें नहीं चला सकती थी वे या तो गुप्तचर के रूप में

कार्य करती थी या रास्ते में जाते हुए सिपाहियों को पत्थर या घर का सामान फेंककर हताहत करती थी। कुछ स्त्रियाँ तो अप्रत्यक्ष रूप से भी युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी, जो अपने भाईयों, पति तथा अन्य पुरुषों को संघर्ष में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित भी किया करती थी। अतः इस संघर्ष में स्त्रियों ने स्वयं ही प्रयत्न नहीं किया था वरन् पुरुषों को प्रोत्साहित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था।

यही नहीं बेगम हजरत महल ने फैजाबाद में मौलवी अहमदल्ला के साथ शाहजहाँपुर में भी अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष में अत्यन्त वीरता का परिचय दिया था। यही कारण था कि युद्ध में अनेक स्थानों पर अंग्रेजी सैनिक पराजित हुए। भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों के निवास क्षेत्र रेजीडेन्सी को काफी लम्बे समय तक घेरे रखा, परन्तु अन्ततः अंग्रेजों ने गौरखा रेजीमेन्ट की सहायता से अवध पर अपना अधिकार कर लिया और अवध भी कम्पनी राज्यों की श्रेणी में सम्मिलित हो गया। युद्ध में पराजित हो जाने के पश्चात् बेगम हजरत महल अन्य नेताओं के साथ नेपाल के वनों में चली गयी, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई।

इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं कि झाँसी की भांति अवध में भी अंग्रेज ही विजयी रहे परन्तु बेगम हजरतमहल ने जिस वीरता एवं साहस से युद्ध का संचालन किया वो एक अद्भुत प्रतिभा थी। स्वयं विनायक दामोदर सावरकर ने बेगम हजरत महल के सम्बन्ध में वर्णित किया है कि, ''अवध की बेगम झाँसी वाली लक्ष्मीबाई के बराबर तो न थी फिर भी वह साहसी, स्वतन्त्रता प्रेमी, संगठन की क्षमता वाली थीं। दरबार में एक महबूब खाँ पर उन्हें पूरा विष्वास था। न्याय, मालगुजारी, पुलिस तथा सैनिक विभागों में भिन्न–भिन्न अधिकारियों की नियुक्ति की थी। हर दिन दरबार लगता था। वहां सभी राजनैतिक प्रश्नें पर चर्चा होती थी। नवाब के स्थान पर बेगम साहिबा ही सभी निर्णय लेती थी। अन्ततः अवध के संघर्ष में भी स्त्रियों की सहभागिता से इन्कार नहीं किया जा सकता जो न केवल युद्ध में अग्रणी रही वरन् जो युद्ध भूमि में वीरगति प्राप्त अपने पारिवारिक सदस्यों के प्रति 'ोक व्यक्त करने के स्थान पर गर्व का अनुभव करती थी। जो केवल महान हृदय वाला ही कर सकता है।

महारानी अवन्ती बाई लोधीः–

रामगढ़ की महारानी अवन्ती बाई लोधी ने भी ब्रिटिश सेना के साथ अत्यन्त वीरतापूर्वक संर्घ"ा किया था यही कारण है कि 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में महारानी अवन्ती बाई लोधी की सहभागिता को नकारा नहीं जा सकता। महारानी अवन्ती बाई लोधी रामगढ़ के राजा लक्ष्मण सिंह की पत्नी थी, जो अत्यन्त वीर एवं आलौकिक तेजयुक्त महिला थी। राजा लक्ष्मणसिंह की मृत्यु के पश्चात् रामगढ में शासन प्रबन्ध की बागडौर महारानी अवन्ती बाई लोधी ने ही संभाली थी। अन्य रियासतों की भांति रामगढ़ भी अंग्रेजों की रणनीति का शिकार बना था। जिसके कारण महारानी को ब्रिटिश सेना से संघर्ष करना पड़ा, परन्तु महारानी ने अत्यन्त 'ूरवीरता से सोहागपुर क निकट ब्रिटिश सेना को बुरी तरह पराजित कर दिया। जिससे सम्पूर्ण मांडला क्षेत्र पर रानी का अधिकार हो गया था परन्तु महारानी की विजय स्थायी नहीं रही। इस युद्ध में अत्यन्त योग्य सेनानायकों के वीरगति प्राप्त करने के कारण धीरे–धीरे शाहपुर एवं सोहागपुर पर अंग्रेजो ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था और जब रानी ने देवगढ़ के पास ब्रिटिश सेना से पुनः युद्ध किया तो वह निर्णायक युद्ध में परणित हो गया जिसमें रानी को हार का सामना करना पड़ा परन्तु रानी ने नतमस्तक होने के स्थान पर कटार से स्वयं अपने प्राण न्यौछाँवर कर दिये।

यद्यपि इस युद्ध में महारानी अवन्ती बाई लोधी को पराजित होना पड़ा परन्तु प्रारम्भिक काल में उनकी विजय एवं राज्यों पर अधिकार के कारण उनकी वीरता एवं श्ज्ञज्ञेय्र से इन्कार नहीं किया जा सकता और अन्त में भी उन्होंने अंग्रेजो के सामने घुटने टेकने के स्थान पर अपने पाण न्यौछाँवर करना अधिक उचित समझा जो केवल एक वीर एवं दबंग महिला के लिए ही संभव है जिसने अन्य महिलाओं के सामने भी एक आदर्श प्रस्तुत किया।

इसके अतिरिक्त कुछ महिलाओं ने अप्रत्यक्ष रूप से एवं छोटे पैमाने पर 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था। जिसमें से कुछ महिलाऐं तो ऐसी थी जो राज परिवार से सम्बन्धित नहीं थी परन्तु फिर भी 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में उनका अमूल्य योगदान था। इन महिलाओं ने अलग–अलग स्थानों पर स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी सहभागिता स्प"ट की थी। मुजफ्फरनगर में **असगरी बेगम** नामक महिला ने स्वतन्त्रता संग्राम में अत्यन्त सक्रिय योगदान

दिया था। असगरी बेगम मुजफ्फरनगर जिले के विद्रोही नेता काजी अब्दुल रहीमखान की माँ थी। उन्होंने अत्यन्त वीरतापूर्वक अंग्रेजों से संघर्ष ही नहीं किया वरन् अन्य महिलाओं का प्रेरणास्त्रोत भी बनी परन्तु अंग्रेजों द्वारा उन्हें जिन्दा जला दिया गया। इसके अतिरिक्त कुछ महिलाओं जैसे आषा देवी, भगवानी, जमीला, मायाकौर इत्यादि महिलाओं ने भी मुजफ्फरनगर में 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में हिस्सा लिया तथा हंसते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। नारकुण्ड रियासत में भास्कर राव बाला साहब की पत्नी जो अत्यन्त वीर थी, ने भी अंग्रेजो से लोहा लिया था। यद्यपि इनके पति भास्कर राव बाबा साहब इस युद्ध में सम्मिलित नहीं थे परन्तु ये बार–बार अपने पति को युद्ध में सम्मिलित होने के लिए एवं अंग्रेजों को पराजित करने हेतु प्रोत्साहित किया करती थी और इन्हीं के प्रेरणास्वरूप अन्ततः बाबा साहब स्वतन्त्रता संग्राम में सम्मिलित हो गये परन्तु बाबा साहब के अत्यन्त वीर होने पर भी उन्हें पराजित होना पडा। जिसका प्रमुख कारण उनके सौतेले भाई का अंग्रेजो से हाथ मिलाना था। परन्तु प्रारम्भिक समय में उन्होंने अनेक ब्रिटिश सैनिकों एवं ब्रिटिश अफसर मानसन को मौत के घाट उतार दिया जो उनकी वीरता का परिचय देता है जिसमें उनकी पत्नी के प्रोत्साहन का अमूल्य योगदान था।

निष्कर्ष–

यही नहीं वरन् दिल्ली में हमीरा एवं मोलिसिन, तुलसीपुर की रानी, बुन्देलखण्ड में मैनावती एवं मेरठ में अनेक वैश्याओं ने संक्षिप्त रूप से ही सही परन्तु 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। इनमें से कुछ महिलाओं ने तो प्रत्यक्ष रूप से युद्ध का संचालन किया था एवं कुछ महिलाओं ने अप्रत्यक्ष रूप से पुरुषों को युद्ध हेतु प्रोत्साहित करके सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया था। इस युद्ध में कुछ महिलाओं ने तो संघर्षरत सैनिकों को घरों में छिपाने, उनके लिए भोजन एवं वस्त्रों की व्यवस्था करने एवं उनके संदेषों को एक स्थान से दूसरी जगह पहुँचाने में भी योगदान दिया था। यही कारण है कि 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की सहभागिता एवं उनके अमूल्य योगदान को नकारा नहीं जा सकता। यद्यपि 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम असफल रहा परन्तु उसके अनेक कारण थे जैसे–केन्द्रीय संचालन का अभाव, प्रभाव क्षेत्र सीमित, भारतीयों के पास अच्छे साधनों का अभाव, अंग्रेजों की शक्तिशाली सेना, कुछ प्रमुख भारतीय राजाओं द्वारा अंग्रजों का सहयोग, नेता के सामने उच्च आदर्षों का अभाव, कुशल नेतृत्व का अभाव व भारतीय जनता की उपेक्षा इत्यादि परन्तु इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं है कि 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम जन आन्दोलन था, जिसमें स्त्रियों न पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर भाग लिया था। यही नही स्त्रियों ने प्रत्यक्ष रूप से केवल युद्ध का संचालन ही नहीं किया था वरन् अप्रत्यक्ष रूप से पुरुषों को इस संघर्ष में सम्मिलित होने हेतु प्रोत्साहित भी किया था। इस युद्ध में सम्मिलित होते समय महिलाओं का मुख्य ध्येय यही था कि विदेशी सत्ता के स्थान पर देशी नरेषों की सत्ता स्थापित करना और इसी भावना से प्रेरित होकर महिलाओं ने इस युद्ध में सक्रिय योगदान दिया था। यही कारण है कि डा0 रामविलास शर्मा ने कहा है कि स्त्रियों का समर्थन किसी भी क्रान्ति की लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण पत्र है। वास्तव में 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में तत्कालीन सामाजिक व्यवस्थाओं के विभिन्न अक्षमताओं के उपरान्त भी भारतीय नारी ने जिस वीरता, साहस का परिचय दिया है वह स्मरणीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. आपस्तम्ब धर्मसूत्र : डा. उमेश चन्द्र पाण्डेय कृत हिन्दी टीका सहित, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
2. पारस्कर ग्रहसूत्र : कर्क, जयराम, हरिहर, गदाधर, विश्वनाथ प्रणीत भाष्य पंचक संहत गुजराती प्रेस
3. तैत्तिरीय संहिता : सायण भाष्य, आनन्दाश्रम, संस्कृत सीरीज, पूना
4. यमस्मृति : स्मृतीनां समुच्चयः, आप्टे एच. आनन्दाश्रम, 1905
5. पाणिनी की अष्टाध्यायी : ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत, चौखम्बा विश्वभारती, वाराणसी
6. मनुस्मृति : निर्णय सागर, बम्बई
7. अथर्ववेद : स्वाध्याय मण्डल, द्वितीय संस्करण, पारडी, सूरत
8. आपस्तम्ब गृह सूत्र : सम्पादक आर. गारले, कलकत्ता, 1882
9. गौतम धर्म सूत्र : डा. उमेश चन्द्र पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज
10. देवल स्मृति : स्मृतीनां समुच्चय, आप्टे एच. आनन्दाश्रम, 1905
11. वृहत संहिता : वराह मिहिरकृत, बिठिलओथिका इंडिका, सुधाकर द्विवेदी द्वारा प्रकाशित

12. श्रीमतद्वाल्मीकीय रामायण : गीता प्रेस, गोरखपुर, भाग–1 व 2, संवत् 2017
13. वशिष्ट धर्म सूत्र : सम्पादक फुहरर, बम्बई, संस्कृत सीरीज
14. विष्णु पुराण : गीता प्रेस, गोरखपुर
15. थेरी गाथा : पाली टैक्स्ट सोसायटी
16. महावग्ग जातक : हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित, खण्ड 1–4
17. नारद स्मृति : जूनियस जाली, कलकत्ता, 1885
18. कालीदास कृत रघुवंश : निर्णय सागर प्रेस, बम्बई
19. बृहस्पति स्मृति : स्मृतीनां समुच्चयः, आप्टे, एच. आनन्दाश्रम, 1905